स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

सत्येन्द्र नाथ बोस

चित्रः के. परशुराम

सत्येन्द्र नाथ बोस का जन्म 1894 में कोलकाता में हुआ। वे सात भाई-बहनों में सबसे बड़े थे, पिता रेलवे में अधिकारी थे। उनकी प्रारंभिक शिक्षा कोलकाता के हिन्दू स्कूल में और आगे की शिक्षा कोलकाता के प्रेसीडेंसी कॉलेज में हुई। वहां उन्हें जगदीश चन्द्र बोस और प्रफुल्ल चन्द्र रॉय जैसे शिक्षक मिले जिन्होंने उन्हें जीवन में ऊंचे लक्ष्य रखने के लिए प्रेरित किया। 1916 से 1921 के दौरान वे कोलकाता विश्वविद्यालय के भौतिकी विभाग में व्याख्याता रहे। उसके बाद उन्होंने सद्य-स्थापित ढाका विश्वविद्यालय में व्याख्याता का पद संभाला। 1924 में उन्होंने एक शोध पत्र लिखा जिसमें क्लासिकल भौतिकी का सहारा लिए बगैर प्लांक के क्वांटम विकिरण नियम का प्रतिपादन किया गया था। इस पर्चे को छपवाने में आई प्रारंभिक दिक्कतों के बाद उन्होंने इसे सीधे अलबर्ट आइंस्टाइन को भेज दिया। आइंस्टाइन ने पेपर के महत्व को समझा और इसे जर्मन भाषा में अनुदित कर 'ज़ाइटश्रिफ्ट फ्यूर फिज़िक्स' में प्रकाशित करवाया। इससे यह हुआ कि बोस को दो वर्षों के लिए युरोप जाने का मौका मिला। 1926 में लौटकर ढाका विश्वविद्यालय में प्रोफेसर और भौतिकी के विभागाध्यक्ष की हैसियत से 1956 तक काम करते रहे।

बोस को 'बोस आइंस्टाइन कंडेन्सेट' और 'बोस आइंस्टाइन सांख्यिकी' के लिए जाना जाता है। परमाणु के एक किस्म के मूल कणों को उनके सम्मान में 'बोसान कण' नाम दिया गया है। क्वांटम यांत्रिकी के विकास में सत्येंद्रनाथ बोस का योगदान महत्वपूर्ण रहा। बोसान कण के लिए कई नोबल पुरस्कार दिए गए हैं मगर स्वयं बोस को इस पुरस्कार से नहीं नवाज़ा गया। वर्तमान में चल रहे मशहूर लार्ज हेड्रॉन कोलाइडर प्रयोग में एक बोसान को खोजने का ही प्रयास हो रहा है। 4 फरवरी 1974 को 80 साल की उम्र में उनका देहांत हो गया।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी